ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 8

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

हम छोटी-सी आत्मा के अन्दर 5000 वर्ष के संस्कार भरे हुए हैं और इन छोटी आत्माओं के द्वारा ही अनेक प्रकार की भाषायें बनी हुई हैं। भारत में 850 भाषायें हैं जिनमें से कई भाषायें प्राय:लोप होती जा रही हैं। बाबा ने हमें बताया है कि भाषा तो सिर्फ भाव व्यक्त करने का साधन है, साध्य नहीं। हमारा प्यारा शिवबाबा साहित्य का स्वामी है अर्थात् भाषा के ऊपर बाबा का प्रभुत्व है। जैसे बाबा ने एक मुरली में कहा है कि आसक्ति से माया आ सकती है, एक अन्य साकार मुरली में कहा है कि सुप्रीम रूह, रूहों से रूहरिहान करते हैं। ऐसे ही एक अन्य मुरली में कहा है कि बाबा DOG को GOD बनाने आते हैं। उसी संदर्भ में मैं भी लिखूँगा कि बाबा हमें MAD से M.D.A. अर्थात् मास्टर ऑफ डिवाइन एडमिनीस्ट्रेशन बनाने आये हैं और उसी दृष्टिकोण से हमारे यज्ञ और पूर्वजों की जीवन कहानी के आधार पर हम सभी सीख सकते हैं। दैवी सुशासन के अनुभवियों द्वारा सीख कर हम अपना भाग्य बना सकते हैं क्योंकि अनुभव द्वारा जो शिक्षा मिलती है वैसी दुनिया में और कहीं भी नहीं मिल सकती।

इतिहास भी अनेक दृष्टिकोण से लिखा जा सकता है। कालक्रम अनुसार मुगल सम्राज्य, मराठा साम्राज्य तथा इंग्लैण्ड के हैनोवर (Hanover) और स्टुअर्ट (Stuart) वंशों का इतिहास है। कई इतिहास गुण और कर्त्तव्य के आधार पर होते हैं जैसे कि रामायण श्रीराम के गुण और कर्त्तव्य पर आधारित है, महाभारत पाण्डवों के गुणों और कर्त्तव्यों पर आधारित है और भागवत श्रीकृष्ण के गुण और कर्त्तव्य पर आधारित है। आदरणीय भ्राता जगदीश जी ने ब्रह्मा बाबा की जीवन कहानी लिखी उसी प्रकार यज्ञ का इतिहास यज्ञ के विकास तथा उसकी क्रमबद्धता के आधार पर लिखा जा सकता है। ऐसे ही यज्ञ में किस प्रकार से अचल सम्पत्ति ली गई उसके बारे में भी लिखा जा सकता है। यज्ञ द्वारा सबसे पहले आबू में पाण्डव भवन खरीदा गया और ट्रस्ट में नक्की लेक के पास का म्यूजियम खरीदा गया। वैसे ही लंदन में सबसे पहले टेनिसन रोड का मकान खरीदा गया। हर मकान लेने के पीछे अपनी-अपनी कहानी है जिसे विस्तार से लिखेंगे तो बहुत बड़ा इतिहास बन जायेगा क्योंकि जिन्होंने अपने मकान सफल किये या मकान लेने के लिए मेहनत की, वे सब उसके बारे में जानते हैं।

इसी प्रकार से दैवी अनुशासन के बारे में प्यारे ब्रह्मा बाबा, बड़ी दादियाँ तथा बड़े भाई-बहनों का जीवन वृत्तांत सुनेंगे तो हमें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। इनके जीवन से प्रेरणा लेकर हम श्रेष्ठ कर्त्तव्य कर अपना जीवन श्रेष्ठ बना सकते हैं। इसी दृष्टिकोण से मैं यह लेखमाला लिख रहा हूँ। इसमें शायद पहले लिखी हुई बातों की पुनरावृत्ति हो सकती है परंतु यह पुनरावृत्ति मेरे विचारों को समझाने के लिए उपयुक्त होगी।

देखा जाये तो मैनेजमेन्ट में कई बातों की जरूरत है। उसमें सबसे पहला गुण है समर्पणता (Dedication)। सन् 1977 में मुम्बई में हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा एक अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस (International Conference) रखी गई थी जिसका शीर्षक था 'Divinize the Man.' मैंने इस विषय पर पेपर प्रेजेन्टेशन किया था – 'समर्पणता द्वारा सम्पूर्णता'। समर्पणता एक बहुत बड़ा महान गुण है और यह गुण वही धारण कर सकते हैं जिनके पास सहनशीलता, नम्रता है और जिनको लक्ष्य के अनुसार समर्पित होने की

भावना हो। दुनिया में भी समर्पण भाव के कारण कइयों ने जीवन का बलिदान किया। जैसे भारत की आजादी के समय भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव ने देशभक्ति की भावना से जीवन का बलिदान दिया। लौकिक जीवन में कई ध्येय प्राप्ति हेतु समर्पित होते हैं, कई संन्यासी बन जाते हैं तथा कई देश-विदेश में परिभ्रमण करते हैं।

प्यारे ब्रह्मा बाबा में समर्पणता के सम्पूर्ण गुण थे। बाबा कोलकाता में हीरे-जवाहरों के बहुत बड़े व्यापारी और डायमण्ड मर्चेन्ट एसोसिएशन (Diamond Merchant Association) के प्रमुख थे। फिर सब कुछ छोड़कर सिंध हैदराबाद में गीता ज्ञान सुनाने लगे। इतना विशाल परिवर्तन केवल समर्पणता के गुण के आधार पर किया।

न सिर्फ उन्होंने यह परिवर्तन किया परंतु उनके परिवार ने भी ऐसा ही विशाल परिवर्तन किया। ब्रह्मा बाबा की लौकिक पत्नी जशोदा माता के हाथ में घर का सारा कारोबार था, उनके नाम पर बाबा ने हैदराबाद में अपने भवन का नाम 'जशोदा भवन' रखा और फिर उसी भवन में रहकर बाबा ने इस यज्ञ की स्थापना की। कितनी भाग्यशाली वह माता रही कि उनके नाम से बना भवन यज्ञ की स्थापना के निमित्त बना। जब ब्रह्मा बाबा ने अपना जीवन यज्ञ में समर्पित किया तब जशोदा माता ने भी अपना जीवन समर्पित किया। जब बाबा ने यज्ञ में सेवाओं की ज़िम्मेदारी सबको बाँटी तो जशोदा माता ने, इतने बड़े घराने की होकर भी अपना अहं मिटाने के लिए, यज्ञ में झाड़ू, पोंछा और बर्तन सफाई की सेवा ली और वैसे ही ब्रह्मा बाबा की लौकिक बेटी दादी निर्मलशान्ता ने भी यज्ञ में बर्तन व गाड़ी साफ करने की सेवा ली। दादी निर्मलशान्ता जी बताते थे कि एक बार कढ़ाई बहुत बड़ी थी जिसे वह अपने हाथों से नहीं साफ कर सकती थी, तो वे कढ़ाई के अंदर जाकर उसे पैरों से साफ करने लगी। इतने में वहाँ बाबा आये और कहा कि बच्ची डांस करना है तो कढ़ाई में क्यों करती हो, स्टेज पर आकर करो। इस प्रकार इन लोगों ने सम्पूर्ण समर्पणता के भाव के आधार पर अपना सारा अहं मिटाकर सेवा की।

ऐसे ही दादी बृजेइन्द्रा जी ब्रह्मा बाबा की पुत्रवधू थी। ब्रह्मा बाबा के बड़े बेटे के साथ उनकी शादी हुई थी। उस समय बाबा ने उन्हें एक रानी के लिए बनाये हुये 3-4 लाख रुपयों के गहने भेंट किये थे।

ब्रह्मा बाबा ने घर पर पत्र भेजा जिसमें लिखा था – 'अलिफ को मिला अल्लाह, बे को मिली झूठी बादशाही, आया तार अलिफ को, हुआ रेल का राही' और उन्होंने अपना सब कुछ शिव बाबा के आगे समर्पण कर दिया। उसी समय दादी बृजेन्द्रा भी स्वेच्छा से समर्पण हो गई। बाबा ने उस समय बीच में एक रूमाल रखा और कहा कि शिवबाबा के यज्ञ में जिसको जो समर्पित करना हो, वह सब कर दो तो दादी बृजेन्द्रा जी ने उसी वक्त अपने सारे गहने उसमें डाल दिये। यह सुनकर मैंने दादीजी से पूछा, दादी जी, आपने अपने इतने बहुमूल्य गहने बाबा के यज्ञ में समर्पित किये तो आपके मन में जरा भी संकोच या शोक नहीं हुआ? दादी जी ने कहा कि शोक की तो बात ही नहीं, मैं तो इन गहनों के बोझ से और ही हल्की हो गई और ऐसा लगा कि जैसे बन्धनों से मुक्त हो गई। इस बोझ से हल्के होने के कारण मेरा योग और ही अच्छा हुआ। यह है धन का और गहनों का समर्पण।

ऐसे ही हमारी परम आदरणीया दादी प्रकाशमणि जी जब पहली बार जशोदा भवन में बाबा की मुरली सुनने आई थी तो मुरली सुनते-सुनते ध्यान में चली गई। मुरली समाप्त हो गई, सब चले गये तो भी उनको पता ही नहीं चला। फिर बाबा ने उन्हें पावरफुल दृष्टि देकर ध्यान से नीचे लाया। दादी जी के लौकिक पिताजी ज्योतिष जानते थे। उन्होंने दादी जी के बचपन में ही जान लिया कि मेरी बेटी अध्यात्म के क्षेत्र में बहुत आगे जायेगी और हमारा नाम रोशन करेगी। इसलिए दादी जी जब यज्ञ में समर्पण

होने आई तब उनके पिताजी ने सहर्ष समर्पण की चिट्ठी दी। दादी जी के शब्दों में, जब से उनके पिताजी ने उन्हें समर्पण की चिट्ठी दी उसके बाद वे कभी भी अपने पिताजी के घर में रात को नहीं रुकी। ज़रूरत होने पर दिन में घर गई पर रात को नहीं रुकी। यह उनका शिवबाबा के प्रति सम्पूर्ण समर्पण भाव था। आज के समय में समर्पित भाई-बहनों को उनके लौकिक में जाने की छुट्टी मिलती है, यह भी एक अलग विशेषता है।

ऐसे ही दादा विश्वकिशोर जी के बारे में भी लिख सकते हैं। वे लौकिक में ब्रह्मा बाबा के भतीजे थे। उनका भी कोलकाता में हीरे-जवाहरातों का धंधा था। वे बहुत अच्छी रीति से अपनी युगल संतरी बहन और बेटे खुशाल के साथ जीवन व्यतीत कर रहे थे। परंतु जैसे ही ब्रह्मा बाबा ने अपना जीवन शिवबाबा के यज्ञ में समर्पित किया तब बाबा ने उन्हें पत्र लिखा। जैसे ही उन्हें बाबा का पत्र मिला उन्होंने अपना धंधा समेट लिया और सिंध-हैदराबाद में आकर यज्ञ में समर्पित हो गये। वे हर समय बाबा के राइट हैण्ड बनकर रहे और अंत तक बाबा के हर कार्य में सम्पूर्ण मददगार बने। मातेश्वरी जी बीमारी के समय मुम्बई में थे। दादा ने मातेश्वरी जी के ऑपरेशन तथा ट्रीटमेंट के बारे में हमारी लौकिक बड़ी बहन डॉ. अनिला बहन के साथ मिलकर सब बातें तय की। दादा, बाबा का भी इतना अधिक ध्यान रखते थे कि जब भी बाबा आबू से मुम्बई जाते थे या मुम्बई से आबू आते थे तो खास रेलवे के बड़े ऑफिसर से मिलकर दिल्ली मेल व गुजरात मेल के ए.सी. डिब्बे (उस जमाने के) देखते थे और उसमें भी यह ध्यान रखते थे कि बाबा की सीट पहिये के ऊपर ना आये ताकि बाबा आराम से सफर कर सकें। मैंने और ऊषा जी ने भी एक बार इसी प्रकार फर्स्टक्लास कैबिन में ऐसी ही सीट पर बैठकर सफर किया तब मालूम पड़ा कि बाबा का सफर सुखमय बनाने के लिए दादा कितनी मेहनत करते थे।

दादा विश्वकिशोर इतने समर्पित बुद्धि के और विश्वासपात्र थे कि बाबा ने उनके नाम पर पाण्डव भवन खरीद किया। परंतु बाद में उन्होंने ही बाबा के पास अर्जी रखी कि बाबा अब तो यज्ञ में अन्य पढ़े-लिखे भाई समर्पित हुए हैं और इसीलिए अब मैं भविष्य की सेवा के प्लानिंग अर्थ नया शरीर धारण करना चाहता हूँ। उनका प्रोस्टेट का साधारण-सा ऑपरेशन मुम्बई में हुआ। उनकी इच्छा थी कि आप्रेशन की टेबल पर ही उनका शरीर छूटे और वे भविष्य की सेवाओं के लिए जायें। जब उन्होंने शरीर छोड़ा था तब अव्यक्त बाबा संदेशी दादी के तन में आये और बाबा ने कहा कि बच्चे की इच्छा तो ऑपरेशन टेबल पर ही शरीर छोड़ने की थी परंतु बाबा ने उन्हें पाँच दिन का जीवनदान देकर शरीर छोड़ने की अनुमति प्रदान की।

जैसे ब्राह्मण जीवन के अंदर पवित्रता आधारस्तंभ है उसी प्रकार से समर्पणता भी आधारस्तंभ है क्योंकि जहाँ समर्पणता नहीं, वहाँ एकाग्रता नहीं हो सकती और जहाँ एकाग्रता नहीं, वहाँ संचालन का कार्य सफलतापूर्वक नहीं हो सकता। समर्पणता के लिए एक स्लोगन याद रखना है, मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। समर्पण बुद्धि तब सात्विक बनेगी जब बाबा की अव्यभिचारी याद होगी। ❖

लेखकों से निवेदन

- जीवन-अनुभव के लेखों को निमित्त शिक्षिका के हस्ताक्षर के साथ भेजें।
- लेख और कवितायें साफ-साफ लिखें। यदि टाइप कराके भेजना चाहें तो आप पोस्ट द्वारा या ई-मेल gyanamritpatrika@bkivv.org पर भेजें।
- अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता, फोन नंबर, ई-मेल, संबंधित सेवाकेन्द्र का नाम, जोन तथा टीचर का नाम भी अवश्य लिखें।
- जो भी रचना भेजें, उसकी एक कॉपी अपने पास अवश्य रखें।